DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
MO- 9415376545

B.A PART-I (HONS.) LECTURE NO.13

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No..... Date.27/04/2020

जॉन लॉक का सामाजिक समझौता सिद्धान्त
(1632 से 1704)

जॉन लॉक इंगलैण्ड के दार्शनिक थे। इन्होंने अपने सिद्धान्त का प्रतिपादन 1660 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'Two Treaties on Government' में किया। लॉक ने अपनी सिद्धान्त की व्याख्या इस प्रकार की—

मानव स्वभाव और प्राकृतिक अवस्था— लॉक के अनुसार "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, इसमें प्रेम, सहानुभूति, सहयोग और दया की भावना से विद्यमान थी। मानव स्वभाव के इस सामाजिकता के कारण प्राकृतिक अवस्था संघर्ष की अवस्था नहीं थी, बल्कि यह तो सद्भावना, सहयोग और सुरक्षा की अवस्था थी।" जॉन लॉक आगे लिखते हैं कि "प्राकृतिक अवस्था नियम विहीन नहीं थी, वरन इसके अन्तर्गत नियम प्रचलित थी, "तुम दूसरों के प्रति वैसा ही व्यवहार करो जैसा व्यवहार तुम दूसरों से अपने प्रति चाहते हो।" प्राकृतिक अवस्था में मनुष्यों को प्राकृतिक अधिकार प्राप्त थे और प्रत्येक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के अधिकारों का आदर करते थे। इसमें मुख्य अधिकार जीवन, स्वतंत्रता और सम्पत्ति के थे।"

समझौते के कारण— इस आदर्श प्राकृतिक अवस्था में कालान्तर में व्यक्तियों को कुछ ऐसी असुविधा अनुभव हुई कि इन असुविधाओं को दूर करने के लिए व्यक्तियों ने प्राकृतिक अवस्था का त्याग करना ही उचित समझा। लॉक के अनुसार ये असुविधाएँ निम्नथी— (i) प्राकृतिक नियमों की कोई स्पष्ट व्यवस्था नहीं थी।
(ii) इन नियमों की व्यवस्था करने के लिए योग्य सभा नहीं थी।
(iii) इन नियमों को पालन कराने हेतु कोई शक्ति नहीं थी।

PTO

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
Mo- 9415376545

B.A PART-I (HONS)

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.....

Date 27/04/2020

समझौता – लॉक के अनुसार दो समझौते किए गए - पहले समझौते के द्वारा ~~अ~~ प्राकृतिक अवस्था का अन्त करके समाज की स्थापना की गई। इस समझौते का उद्देश्य व्यक्तियों के जीवन, स्वतंत्रता और सम्पत्ति की रक्षा है। पहले समझौते के बाद शासक और शासित के मध्य दूसरा समझौता हुआ जिसमें शासित ~~वर्ग~~ वर्ग के द्वारा शासक को कानून बनाने, उनकी व्यवस्था करने और उन्हें लागू करने का अधिकार दिया जाता है। परन्तु शासक की शक्ति पर यह प्रतिबन्ध लगा दिया गया कि उसके द्वारा निर्मित कानून अनिवार्य रूप से प्राकृतिक नियमों के अनुकूल और अनुरूप होंगे। तथा वे जनता के हित में ही होंगे।

(समाप्त)

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
Mo- 9415376545

B.A PART-I (HONS) LECT. No. 14

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.....

Date. 27/04/2020

रूसो का सामाजिक समझौता सिद्धान्त

विचारक रूसो ने अपने सामाजिक समझौता सिद्धान्त का प्रतिपादन 1762 ई० में प्रकाशित अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'The Social Contract' में किया है। हॉब्स और लॉक के समान रूसो के द्वारा इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया है। उससे वह प्रजातंत्र का अग्रदूत बन जाते हैं। रूसो ने अपने सिद्धान्त की व्याख्या इस प्रकार की है –

मानव स्वभाव और प्राकृतिक अवस्था – रूसो लिखते हैं कि "मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है, किन्तु वह सर्वत्र जंजीरों में जकड़ा हुआ है।" इस वाक्य से रूसो इस तथ्य का प्रतिपादन करते हैं कि "मनुष्य मौलिक रूप से अच्छा है और सामाजिक बुराइयाँ ही मानवीय अच्छाई में बाधक बनती हैं" प्राकृतिक अवस्था के व्यक्ति के लिए रूसो 'आदर्श बर्बर' नोबल सेवेज (Novel Savage) शब्द का प्रयोग करते हैं। यह 'आदर्श बर्बर' अपने में ही इतना संतुष्ट था कि न तो उसे किसी सभा की आवश्यकता थी और न किसी का अहित करने की उसकी इच्छा थी। इस प्रकार प्राकृतिक अवस्था में व्यक्ति एक भले और महान बालक की भाँति रहेगा और परमसुख का जीवन व्यतीत करता था। इस प्रकार प्राकृतिक अवस्था पूर्ण स्वतंत्रता, समानता और पवित्र तथा कपटहीन जीवन की अवस्था थी। परन्तु इस प्राकृतिक अवस्था में विवेक का नितान्त अभाव था।

समझौते के कारण – प्राकृतिक अवस्था आदर्श व्यवस्था थी लेकिन कुछ समय बाद ऐसे कारण उत्पन्न हुए

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
Mo. 9415376545

B.A PART-I (HONS)

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.................. Date 27/04/2020

जिन्होंने इस अवस्था को दूषित कर दिया। कृषि के आविष्कार के कारण भूमि पर स्थायी अधिकार और इसके परिणाम स्वरूप सम्पत्ति तथा मेरे-तेरे की भावना का विकास हुआ। जब व्यक्ति भूमि पर अधिक-से-अधिक अधिकार करने की इच्छा करने लगा तो प्राकृतिक शांतिमय जीवन नष्ट हो गया और समाज की लगभग वही दशा हुई जो हॉब्स की प्राकृतिक दशा में थी सम्पत्ति को समाज की स्थापना के लिए उत्तरदायी ठहराते हुए रूसो लिखते हैं कि "वह पहला व्यक्ति समाज का वास्तविक संस्थापक था जिसने एक भू-भाग को बाड़े से घेरकर कहा कि यह मेरी भूमि है और जिसके इस कथन के प्रति विश्वास करने वाले सरल व्यक्ति मिल गए।" इस प्रकार प्राकृतिक दशा का आदर्श रूप नष्ट होकर युद्ध, संघर्ष और विनाश का वातावरण स्थापित हो गया। युद्ध और संघर्ष के वातावरण का अन्त करने के लिए व्यक्तियों ने पारस्परिक समझौते ~~एक~~ द्वारा समाज की स्थापना का निश्चय किया।

समझौता — इस असहनीय स्थिति से छुटकारा प्राप्त करने हेतु सभी व्यक्ति एक स्थान पर एकत्रित हुए और उनके द्वारा अपने सम्पूर्ण अधिकारों का समर्पण किया गया। किन्तु यह अधिकारों का सम्पूर्ण समर्पण किसी व्यक्ति-विशेष के लिए नहीं वरन् सम्पूर्ण समाज के लिए किया गया। समझौते के परिणामस्वरूप सम्पूर्ण समाज की एक सामान्य इच्छा उत्पन्न होती है और सभी व्यक्ति इस सामान्य इच्छा के अन्तर्गत रहते हुए कार्य करते हैं। स्वयं रूसो के शब्दों में "समझौते के अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति अप

PTO

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
MO- 9415376545

B.A PART-I (HONS)

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.....

Date. 27/04/2020

अपनी पूर्ण शक्ति को सामान्य प्रयोजन के लिए सामान्य इच्छा के सर्वोच्च निर्देशन के अधीन समर्पित कर देता है और इस समूह के रूप में अपने व्यक्तित्व तथा अपने पूर्ण शक्ति को प्राप्त कर लेता है, इस प्रकार के हस्तांतरण से सभी पक्षों को लाभ होती है और सामान्य इच्छा का जन्म होता है।

(समाप्त)

Scanned with CamScanner